गज़ल

उम्र जलवों में बसर हो,ये जरूरी तो नहीं
हर शबे ग़म की सहर हो,ये जरूरी तो नहीं

1- चश्मे साकी से पिओ या लबे सागर से पिओ
बेखुदी आठों पहर हो ,ये जरूरी तो नहीं

2- नींद तो दर्द के बिस्तर पर भी आ सकती है
उनके आगोश में सिर हो ये जरूरी तो नहीं

3- शेख करता तो है मस्जिद में खुदा को सज़दे
उसके सज़दों में असर हो,ये जरूरी तो नहीं

4- सबकी नज़रों में हो साकी यह जरूरी है मगर
सब पे साकी की नज़र हो,ये जरूरी तो नहीं

Nijanand App